

जीवन्मुक्ति (जीवत् + मुक्ति) f. eine Erlösung bei Lebzeiten MADHUS. in Ind. St. 1, 20. Verz. d. B. H. No. 632. COLBR. Misc. Ess. I, 369, 376.  
 °विवेक Titel eines philosophischen Tractats (handschriftlich auf der Tübinger Universitäts-Bibl.) Verz. d. B. H. No. 645.  
 जीवन्मृत (जीवत् + मृत) adj. lebend und zugleich todt Būlg. P. 5, 10, 8, 14, 12. जीवन्मृतत्व 10, 12. Vgl. जीवन्निप्रमाणा 14, 12.  
 जीवपति (जीव + पति) m. ein lebender, am Leben bleibender Gatte: स्त्री वेतदास्थाय लभते सैभगं श्रियं प्रजा जीवपतिं यशो गृह्ण् Būlg. P. 6, 19, 24.  
 जीवपत्र (जीव + पत्र) n. ein lebendes, frisches Blatt: जीवपत्रप्रचायिका f. das Abpflücken solcher Blätter, Bez. einer Art von Spiel P. 6, 2, 74, Sch. जीवपत्रप्र° v. l.  
 जीवपत्नी (जीव + पति) adj. f. deren Gatte lebt ḌCV. GRU. 1, 7, 14. GOBH. 2, 7, 12. — Vgl. जीवपति.  
 जीवपितर (जीव + पितर) adj. dessen Vater noch lebt ḌĀNH. ḌR. 4, 4, 12. °पितृक dass. KĀTJ. ḌR. 4, 1, 24, 26.  
 जीवपीतसर्ग s. u. पीत.  
 जीवपुत्र (जीव + पुत्र) 1) adj. dessen Sohn, Kinder leben RV. 10, 36, 9. AV. 12, 3, 35. MBH. 5, 899. f. स्त्री HARIV. 7648. ई R. 4, 18, 10 (GORR.: Tochter des Gīva). — 2) m. eine best. Pflanze: जीवपुत्रप्रचायिका f. das Abpflücken von G., Bez. einer Art von Spiel SIDDH. K. zu P. 6, 2, 74 (v. l. जीवपत्रप्र°).  
 जीवपुत्रक (wie eben) m. Terminalia Catappa (s. इडुद्र) ḌABDAR. im ḌKDR. = पुत्रजीव RAMĀN. zu AK. ḌKDR.  
 जीवपुरा (जीव + पुरा) f. Wohnsitz der Lebendigen (Menschen): दूतौ यमस्य मानुं गा अग्निं जीवपुरा ईहि AV. 5, 30, 6. 2, 9, 3.  
 जीवपुष्प (जीव + पुष्प) 1) n. die Blume des Lebens, Bez. einer best. Pflanze und bildliche Bez. des Kopfes: अस्माकं शिविरे तावन्निशिताः शस्त्रपाणयः । शत्रूणां जीवपुष्पाणि विचिन्वन्तु नगेधिव ॥ R. 5, 83, 13; vgl. उत्तमाङ्गानि प्राचिनात् u. 1. चि mit प्र. Nach H. an. 4, 207 Name zweier Pflanzen: a) = दमनक. — b) = फणिसकक. — 2) f. स्त्री N. einer Pflanze = वृहत्जीवन्ती RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवप्रिया (जीव + प्रिया) m. N. eines Baumes, Terminalia Chebula Roxb. (ह्रीतकी), RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीववर्हिम् (जीव + व°) adj. eine lebendige, ganz frische Opferstreu habend AV. 11, 7, 7.  
 जीवभद्रा (जीव + भद्रा) f. eine best. Pflanze, = जीवन्ती; ein best. Heilmittel, = वृद्धि RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवभोजन (जीव + भो°) 1) adj. die Lebendigen ergötzend: समञ्जिं चौर्या वृषन् । य स्त्रीणां जीवभोजनः der die Lust der Weiber ist VS. 2, 3, 31. — 2) n. Genuss —, Ergötzung der Lebendigen: उत्तमृतस्य त्वं वृत्थाथै अस्मि जीवभोजनमथै हरितभेषजम् AV. 4, 9, 3.  
 जीवमन्दिर (जीव + म°) n. das Gehäuse der Seele, der Körper RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवमय (von जीव) adj. beseelt, mit Leben versehen Būlg. P. 9, 9, 24.  
 जीवयज्ञ (जीव + यज्ञ) m. Opfer von Lebendigem: यो जीवयज्ञं यज्ञं सोपमा दिवः RV. 1, 31, 15.  
 जीवयोनि (जीव + योनि) adj. eine Seele in sich schliessend, beseelt:

तिर्यङ्मनुष्यविबुधादिषु जीवयोनिषु Būlg. P. 3, 9, 19.  
 जीवर्क्त (जीव + रक्त) n. lebendiges Blut, Bez. des Menstrualblutes SuḌR. 1, 43, 19. — Vgl. जीवशाणित.  
 जीवर्त्त (von जीव) 1) adj. f. स्त्री lebensvoll, belebend: स्त्रीः AV. 10, 6, 3. 12, 3, 25. 19, 69, 4. — 2) m. a) eine best. Pflanze AV. 19, 39, 3. — b) N. pr. eines Mannes ḌAT. BR. 2, 3, 1, 34. N. 15, 7. Vgl. जीवलि. — 3) f. स्त्री eine best. Pflanze AV. 6, 59, 3. 8, 2, 6. 7, 6. 19, 39, 3. = मैकली RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवलोक (जीव + लोक) m. die Welt der Lebenden (im Gegens. gegen die der Väter), die lebenden Wesen, die Menschen RV. 10, 18, 8. AV. 18, 3, 34. ḌAT. BR. 13, 8, 4, 6. MBH. 3, 1373. 5, 1055. BHAG. 15, 7. R. 1, 1, 15. 2, 41, 6. 74, 6. 3, 69, 16. 4, 43, 58. 5, 32, 6. ḌĀNTIḌ. 2, 2. ḌĀK. 60. RĀGĀ. 5, 35. PANĀT. 1, 9. 49, 4. 226, 6. HIT. 17, 19. Būlg. P. 1, 7, 24. 16, 23. 3, 10, 9. pl. HIT. Pr. 18; vgl. jedoch MBH. 5, 1055. ब्रह्माण्डजीवलोकामानन्तत्वात् (BALL.: of multitudes of souls in the universe) Sch. zu KAR. 1, 160.  
 जीवलौकिक (von जीव + लोक) adj. der Welt der Lebenden, den Menschen eigen u. s. w. (Gegens. पित्र्य, दैव): राज्यकृती MBH. 12, 3495.  
 जीववत् (von जीव) adj. beseelt, lebend: कृतो ऽपि — जीववानिति लक्ष्यते MBH. 8, 4930.  
 जीववल्ली (जीव + व°) f. N. einer Pflanze (लीरकाकोली) RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीववृत्ति (जीव + वृत्ति) f. Viehzucht (Lebensunterhalt durch Lebensdes) H. 888.  
 जीवशंस (जीव + शंस) m. die Herrschaft über die Lebenden: स त्वं न इन्द्र सूर्ये सो अस्वनागास्व आ भज जीवशंसे RV. 1, 104, 6. स्त्री नो भज वृहृषि जीवशंसे 7, 46, 4.  
 जीवशर्मन् (जीव + श°) m. N. pr. eines Astronomen VARĀH. BRH. 7, 9, 11, 1.  
 जीवशाक (जीव + शाक) m. eine best. in Mālava wachsende Gemüsepflanze (जीवत्त, ताम्रपत्र, प्रवाल, मेषक, रक्तनाल, शाकवीर, सुमधुर) RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवशुक्ला (जीव + शु°) f. eine best. Pflanze (लीरकाकोली) RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवशेष (जीव + शेष) adj. der nur das Leben gerettet hat: केचिन्मुताः केचिच्च जीवशेषा जाताः PANĀT. 160, 2.  
 जीवशाणित (जीव + शा°) n. lebendiges d. h. gesundes Blut SuḌR. 2, 193, 9, 20.  
 जीवश्रेष्ठा (जीव + श्रेष्ठा) f. eine best. Arzneipflanze (ऋद्धि) RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवसंज्ञ (जीव + संज्ञा) m. N. eines Strauchs (कामवृद्धि) RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवसाधन (जीव + सा°) n. Reis, Korn (Lebensmittel) RĀGĀN. im ḌKDR.  
 जीवसुत (जीव + सुत) adj. f. स्त्री dessen Kinder am Leben sind Būlg. P. 6, 19, 25.  
 जीवसू (जीव + सू) adj. f. ein lebendes Kind gebärend H. 530. GOBH. 2, 7, 12. MBH. 1, 7353.